

PROF. CHANDRASEKHAR RATH (POSTHUMOUS)

Prof. Chandrasekhar Rath has been a deep thinker, eloquent speaker, athlete, fascinating writer touching all genres of literature, a creative artist with his hands on sculpting, painting, clay modeling, doodling, carvings on wood and stone and an inspiring professor par excellence with pupils all over the world. Many awards, doctorates were conferred on him for his illustrious work in the fields of education, oration and literature. He has been a spiritually realized person, austere, straight and unbending. A complete man who assimilated all aspects of culture and art; and disseminated the Indian values in India and abroad.

2. Born on October 17, 1929, Prof. Rath still stands out among his contemporary writers in Odia literature for his remarkable background and contributions to diverse literary genres like belle-letters, fiction and poetry. His strong roots in the legacy of a traditional Indian family gave him an early exposure to scriptural Sanskrit which is the fount of his pan-Indian thought and philosophy. Degrees in Mathematics and English gave him both precision of expression and a rich sensibility for literatures available through English. In Lucknow, he studied English literature under Prof. N.K.Siddhanta, an eminent scholar from Oxford. Acharya Narendra Dev was his Vice-Chancellor and Dr.Shankar Dayal Sharma taught him law and others who played vital role in shaping post-independent India. He himself was an example of whatever he taught.

3. Prof. Rath's writings form a rich tapestry of sensibility in their depth, dimension and diverse pictures of life with an inherent urge to unfold the ultimate truth through simplicity, charm and glitter of poetic prose to entice the reader, thus creating his new genre of essays. While continuing to write his essays he seamlessly changed to a powerful story writer. He believed that every form has its own identity and all that can be told in a short story cannot be expressed in an essay.

4. Prof. Rath has three novels, sixteen volumes of short stories, nine volumes of essays, four volumes of poetry in his mother tongue, Odia. As rightly assessed by critics, his three novels form a trilogy of a thesis, antithesis and synthesis viz. Yantrarudha story of hoary traditions and time honoured values of life, Asurya Upanivesha ,exposes the total absence of values in a world of darkness while the third one Nav Jataka is a transcendence of values to superhuman heights. They seem to represent the past, the present and the future of mankind in the Indian perspective. Rathasaptaka which is sheer emotional profound poetry in prose laced with scriptural erudition woven around Lord Jagannath and Rath Yatra. The other is Pathachakra Diary, a record of reflections and meditations inspired by Sri Aurobindo's philosophy. He also translated the commentary of Acharya Shankara on the Bhagwad Gita into Odia. Ritu Chitrashala, unique Sanskrit Composition with his own English rendering (Picture Gallery of Seasons and other Compositions) and hundreds of his poems in English were released in Hyderabad Literary Festival.

5. Prof. Rath has probably a much larger number of admirers of his oratory in India and abroad than he has readers of his books. His speeches were ex tempore and at ease. He addressed at Bharatiya Bhasha Parishad(Calcutta)1991, Divine Life Society (Rishikesh) on 125th Birth Anniversary of Swami Shivananda1991, The Parliament of Religions: Centenary Celebration of Vivekananda's Chicago Address(Calcutta)1993, Foundation Day Oration,Ramakrishna Mission Institute of Culture (Calcutta) 1994,Swami Vivekananda Birthday Oration Patna &Lucknow1995-96, Institute of Human Studies (Hyderabad)1998, Religio-cultural Assemblies (USA and Canada)1999, Sri Aurobindo Ashram, Delhi Branch 1998-2002, All India Senior Citizens Study Camps (Nainitaal):Spiritual Orations 10days every year during1998-2002 on the Gita, The Upanishads, The Life Divine, Supramental Manifestations, The Mother; Speeches in public forum in Lucknow University,2008, Public Speeches on Sri Aurobindo's Philosophy & Indian Cultural Heritage at Singapore,2009, Addresses in Bharatiya Vidya Bhavan, Bhubaneswar,2009-12, Renaissance International Orations,2010-12, Nilakantha Memorial Oration, Bhubaneswar 2013(YouTube), Swabhiman Divas Oration, Aama Odisha,2014(Sambad Aam Odisha Website), Think Literature:Keynote Address,2013(Youtube). In addition, World Union meetings were conducted by him once every month for several years as an exercise of introspection and spiritual seeking.

6. Prof. Rath has received the following awards: Prajatantra Vishuva Swikruti1963&1967,Prajatantra Vishuva Award(Essays),1971, Dharitree Recognition(Comprehensive),1979,Odisha Sahitya Akademi(Novel), 1973, Odisha Sahitya Akademi(Essays),1978, Sarala Award (Stories),1982, Sambalpur University Bharat Chandra Award,1989, Jaggannath Samman (Comprehensive),1997, Sahitya Akademi National Award (Stories),1997, Hutch Crossword Book Award for novel Yantrarudha,(Translated title Astride the Wheel),2004, D.Litt.by Lucknow University,2008, Kadambini Award,2010, Atibadi Jagannath Das Award,2010, Sahitya Bharati Award,2011, D.Litt by Utkal University of Culture in 2012, Utkal Sahitya Samaj Lifetime Member Award, 2015, Chaturdhaa Samman, 2017.

7. Prof. Rath passed away on February 09, 2018.



प्रो. चन्द्रशेखर रथ (मरणोपरांत)

प्रो. चन्द्रशेखर रथ एक गहन विचारक, वाकपटु वक्ता, खिलाड़ी तथा हृदयस्पर्शी लेखक हैं जिन्होंने साहित्य की सभी विधाओं में रचनाएं की हैं। आप एक ऐसे सृजनात्मक कलाकार हैं जिन्होंने मूर्तिकला, चित्रकला, क्ले मॉडलिंग, ड्रॉइलिंग, लकड़ी तथा पत्थरों पर नक्काशी में अपना कौशल दिखाया है और आप विश्व भर में अनेक विद्यार्थियों के लिए सर्वोत्कृष्ठ प्रेरणादायक प्रोफेसर रहे हैं। शिक्षा, भाषण तथा साहित्य के क्षेत्रों में महान कृतियों के लिए आपको अनेक पुरस्कारों तथा अलंकरणों से सम्मानित किया गया है। आप आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत सीधे साधे अटल स्वभाव की शख्सियत हैं। आपने संस्कृति तथा कला के सभी पहलुओं को आत्मसात करके भारत तथा विदेश में भारतीय मूल्यों के प्रचार- प्रसार में अहम भूमिका अदा की है।

2. आपका जन्म 17 अक्टूबर 1929 को हुआ। आपकी असाधारण पृष्ठभूमि तथा बैलेलेटर, कथा साहित्य एवं कविता जैसी साहित्य की विविध विधाओं में आपके अतुलनीय योगदान के लिए उड़िया साहित्य के समकालीन लेखकों में आपको विशेष दर्जा प्राप्त है। परम्परागत भारतीय परिवार में पलने बढ़ने की वजह से प्राप्त अनुभव के कारण आपको आध्यात्मिक संस्कृति के विषय में अत्यंत युवावस्था में ज्ञान की प्राप्ति हुई जो आपके पैन इंडिया विचारों तथा विचारधारा का मुख्य स्रोत हैं। गणित तथा अंग्रेजी में प्राप्त डिग्रियों की वजह से आपको यथार्थ अभिव्यक्ति तथा गहन अनुभूति के गुण की प्राप्ति हुई जो अंग्रेजी साहित्य में बर्बस ही देखने को मिलता है। लखनऊ में आपने ऑक्सफोर्ड के एक प्रख्यात स्कॉलर प्रोफेसर एन. के. सिद्धान्त के मार्गदर्शन में अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन किया। आचार्य नरेन्द्र देव आपके उप-कुलपति रहे तथा डा. शंकर दयाल शर्मा के कुशल मार्गदर्शन में आपने लॉ की पढ़ाई की। इसके अलावा ऐसे अन्य अनेक लोगों के संपर्क में आए जिन्होंने स्वतंत्रता के बाद के भारत की रूपरेखा तैयार करने में अहम भूमिका निभाई। आप जो कुछ अपने छात्रों को पढ़ाते थे स्वयं भी उन बातों का अनुसरण करते थे।

3. आपकी रचनाएं गहराई, विस्तार तथा जीवन के विविध पहलुओं के प्रति संवेदनशीलता की एक विस्तृत निधि हैं तथा इन रचनाओं में पाठकों को लुभाने के लिए काव्यात्मक गद्य की सरलता, आकर्षण एवं चकाचौंध के माध्यम से परम सत्य को उजागर करने का अंतर्निहित आग्रह परिलक्षित होता है। इस प्रकार आपको निबन्धों की एक नई विधा का सृजन करने का श्रेय प्राप्त है। निबंध रचनाकार के रूप में अनवरत प्रयासरत रहते हुए आप एक सशक्त कथालेखक बन गए। आपका यह मानना रहा है कि साहित्य की हर विधा की अपनी एक अलग पहचान है किन्तु एक लेखक लघु कहानी के माध्यम से जिन विचारों की अभिव्यक्ति भावपूर्ण ढंग से कर सकता है वह निबंध में संभव नहीं है।

4. आपने अपनी मातृभाषा में उड़िया में तीन उपन्यासों, लघु कहानियों के 16 खण्डों, निबंधो के 09 खण्डों तथा कविता के 04 खण्डों को लेखनीबद्ध किया है। जैसा कि आपके आलोचकों द्वारा आपके विषय में सही ही कहा गया है कि आपके तीन उपन्यास थीसिस, एन्टीथीसिस और सिन्थेसिस का एक उपन्यासत्रयी प्रस्तुत करते हैं अर्थात् यंत्ररूधा पुरातन परंपराओं तथा चिर-प्रचलित जीवन मूल्यों की कहानी है, असूर्या उपनिवेशा अंधकारमय विश्व में मूल्यों के पूर्ण पतन को उजागर करती है जबकि नवजातक नामक तीसरा उपन्यास लोकातीत स्तर से भी ऊपर मानवीय मूल्यों की श्रेष्ठता को दर्शाता है। इन रचनाओं में मानवता के भूतकाल वर्तमानकाल तथा भविष्य को भारतीय परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया गया है। रथसप्तक भगवान जगन्नाथ तथा रथयात्रा के ताने बाने से बुनी गई एक परिपूर्ण भावनात्मक रूप से गहन गद्य कविता है जो शास्त्रीय विद्वत्ता से सराबोर है। अन्य रचना पथचक्र डायरी श्री अरविन्दो के दर्शन शास्त्र से प्रेरित विचारों एवं ध्यान का लेखा-जोखा है। आपने आचार्य शंकर की भागवत गीता संबंधी कमैन्ट्री का भी उड़िया भाषा में अनुवाद किया। आपकी उत्कृष्ठ संस्कृत रचना ऋतुचित्रशाला, जिसका आपने स्वयं अंग्रेजी में अनुवाद किया था (पिक्चर गैलरी ऑफ सीजनस एण्ड अदर कम्पोजीशनस) तथा अंग्रेजी में आपके द्वारा रचित असंख्य कविताओं का, हैदराबाद साहित्य उत्सव में विमोचन किया गया।

5. भारत तथा विदेश में आपकी पुस्तकों के प्रशंसक पाठकों की अपेक्षा आपकी वाकपटुता के प्रशंसकों की संख्या काफी अधिक है। आप बिना तैयारी के भाषण देते हैं तथा वो सहज होते हैं। आपके भाषणों में भारतीय भाषा परिषद (कलकत्ता) 1991, स्वामी शिवानन्द की 125वीं जन्मशती के अवसर पर डिवाइन लाइफ सोसाइटी (ऋषिकेश) 1991 : स्वामी विवेकानन्द के शिकागो भाषण के 100 वर्ष पूरे होने पर मनाये गये उत्सव : द पार्लियामेंट ऑफ रिलीजियन (कलकत्ता) 1993, रामकृष्ण मिशन इन्स्टीट्यूट ऑफ कल्चर (कलकत्ता) 1994 के स्थापना दिवस पर भाषण, स्वामी विवेकानन्द के जन्म दिवस पर पटना तथा लखनऊ में 1995-96 में दिया गया भाषण, इन्स्टीट्यूट ऑफ ह्यूमन स्टडीज (हैदराबाद) 1998, रिलीजियो-कल्चरल असेम्बलीज (अमेरिका एवं कनाडा) 1999, श्री अरविन्दों आश्रम, दिल्ली शाखा 1998-2002, अखिल भारतीय वरिष्ठ नागरिक अध्ययन शिविर (नैनीताल): आध्यात्मिक भाषण, वर्ष 1998-2002 के दौरान गीता, उपनिषदों के संबंध में प्रतिवर्ष 10 दिनों तक भाषण, द लाइफ डिवाइन, सुप्रामेंटल मेनीफेस्टेशन्स, द मदर; लखनऊ विश्वविद्यलय में वर्ष 2008 में जनमंच पर दिए गए भाषण, वर्ष 2009 में सिंगापुर में श्री अरविन्दों के दर्शनशास्त्र एवं भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संबंध में दिए गए भाषण, भारतीय विज्ञान भवन, भुवनेश्वर में वर्ष 2009-12 के दौरान दिए गए भाषण, फिनेसान्से इंटरनेशनल ओरेशन 2010-12, नीलकंठ स्मारक भाषण, भुवनेश्वर 2013 (यू ट्यूब), स्वाभिमान दिवस भाषण, आमा उड़ीसा, 2014 (संबाद आम उड़ीसा वेबसाइट), थिंक लिटरेचर: मुख्य भाषण 2013 (यू ट्यूब) शामिल हैं। इसके अलावा आपके द्वारा अंर्तदर्शन एवं आध्यात्मिक ज्ञान के लिए कई वर्षों तक माह में एक बार विश्व एकता बैठकों का आयोजन भी किया गया ।

6. आपको अनेक पुरस्कारों से सुशोभित किया गया है जिनमें प्रजातंत्र विश्व स्वीकृति1963-1967, प्रजातंत्र विश्व अवार्ड (निबंध), 1971; धारित्री रिकगनीशन (कम्प्रीहेन्सिव) 1979, उड़ीसा साहित्य अकादमी (उपन्यास), 1973; उड़ीसा साहित्य अकादमी (निबंध),1978, सरला अवार्ड (कहानी), 1982, संबलपुर यूनीवर्सिटी भारत चंद्र अवार्ड 1989, जगन्नाथ सम्मान (कम्प्रीहेन्सिव) 1997, साहित्य अकादमी राष्ट्रीय पुरस्कार (कहानी), 1997, हच क्रॉसवर्ड बुक अवार्ड फॉर नोवेल यंत्ररूधा (अनुदित शीर्षक: एस्ट्राइड द व्हील) 2004, लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा वर्ष 2008 में प्रदत्त डी. लिट की उपाधि, कादम्बनी पुरस्कार 2010, अतिबादी जगन्नाथ दास अवार्ड 2010, साहित्य भारती अवार्ड 2011, वर्ष 2012 में उत्कल यूनीवर्सिटी ऑफ कल्चर द्वारा प्रदत्त डी. लिट की उपाधि, उत्कल साहित्य समाज लाइफ टाइम मेंबर अवार्ड, 2015, चतुरधा सम्मान 2017 शामिल हैं।

7. दिनांक 09 फरवरी 2018 को आपका देहावसान हो गया।